उत्तर भारत में कपास की फसल में नाशीजीव चेतावनी एवं प्रबंधन सलाह

****

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्-राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसन्धान केंद्र, नई दिल्ली की कपास टीम द्वारा 09 सितम्बर 2021 के दौरान हरियाणा के मेहम ब्लाक में कपास के खेतों का दौरा किया गया। सर्वेक्षण में पाया गया कि कपास की फसल फूल व टिंडे बनने की अवस्था में है, अधिकतर खेतों में सफ़ेद मक्खी और थ्रिप्स की संख्या आर्थिक क्षति स्तर से कम पाई गयी जबकि हरा तेला (जेस्सिड) की संख्या व् क्षति के लक्षण अधिकतर खेतों में आर्थिक हानि स्तर के आस पास देखे गए। गुलाबी सुंडी का प्रकोप कुछ पौधों में मौजूद था जोकि आर्थिक हानि स्तर से काफी कम था। इस वर्ष **वर्षा अधिक होने की वजह से अधिकतर खेतों में टिंडा सड़ने (बाल रॉट) की बीमारी से लगभग 30-50 प्रतिशत टिंडे रोग ग्रसित पाए गए। कुछ टिंडे ऊपर से देखने में हरे स्वस्थ तथा अन्दर से देखने पर पीलापन तथा लालामी, भूरे एवं सड़ते हुए दिखाई दिए। अधिकतर किसान इसे गुलाबी सुंडी का प्रकोप समझकर भ्रमित हो रहे हैं जबकि यह जीवाणु जनित बोल रॉट बीमारी है।** कुछ टिंडे बाहर से काले फफूंद युक्त थे जोकि फफूंद जनित बोल रॉट बीमारी है। अतः किसानों को सलाह दी जाती है कि:

- खेत की निगरानी जारी रखें और किसी भी घातक कीटनाशक के छिडकाव से बचें तथा फसल को स्वस्थ बनाये रखने के लिए पोटैशियम नाइट्रेट (13.0.45) के 2 % की दर से साप्ताहिक अन्तराल पर स्प्रे करें।
- **बाल रॉट की रोकथाम के लिए तत्काल कापर आक्सीक्लोराइड 50 % WP 25 ग्राम + स्टेप्टोसाईक्लिन 1 ग्राम दवा को प्रति 10 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करें। आवश्यकता पड़ने पर दूसरा छिडकाव 15 दिन बाद कर सकते हैं।**
- हरा तेला तथा सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक होने पर फ्लोनिकामिद 50 डब्ल्यू जी 60 ग्राम /एकड़ की दर से 200 लीटर पानी के साथ स्प्रे करें। ध्यान रखें छिडकाव के लिए साफ़ पानी का प्रयोग करें।
- कोरोना बीमारी से बचाव हेतु सरकार द्वारा जारी सभी निर्देशों का पालन करें ।

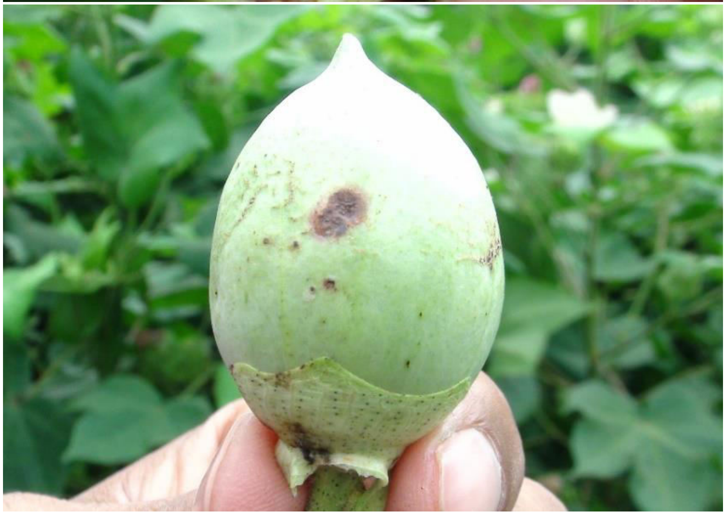

-

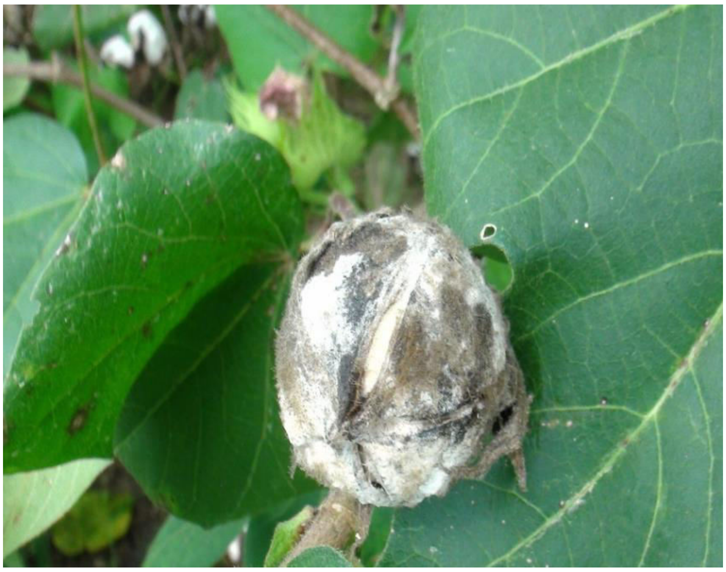

बाल रॉट बीमारी से ग्रसित टिंडे